दैनिक भारत कि
तामीर
संपादक - काझी मकदूम शफीउद्दीन hinditameer@gmail.com
Editor in chief- Qazi makhdoom shafiuddin

बीड (महाराष्ट्र) | वर्ष-१ ला | अंक-२८९ वा | मंगळवार १९ मे २०२५ | RNI TITLE CODE:MAHHIN11405/120/1/3/2024 | किमत : २ रूपये | पन्ने - ४

आरबीआई की ताज़ा अपडेट: अभी भी लोगों के पास हैं २००० के नोट, दो साल बाद भी ६,२६६ करोड़ रुपए का नहीं हुआ निपटारा

नई दिल्ली,१९ मई २०२५
नई दिल्ली:

भारतीय रिज़र्व बैंक (ठइख) द्वारा २००० रुपए के नोटों को चलन से बाहर करने के फैसले को लगभग दो साल बीत चुके हैं, लेकिन इन नोटों की एक बड़ी मात्रा अब भी लोगों के पास पड़ी है। आरबीआई के अनुसार, ३० अप्रैल २०२५ तक कुल ६,२६६ करोड़ रुपए के २००० रुपए के नोट अभी भी प्रचलन से वापस नहीं लौटे हैं।

पीटीआई की रिपोर्ट के मुताबिक, रिज़र्व बैंक ने शुक्रवार को जारी अपने ताज़ा आंकड़ों में यह जानकारी दी। गौरतलब है कि १९ मई २०२३ को आरबीआई ने २००० रुपए के नोटों को चलन से वापस लेने की घोषणा की थी।

ठइख के अनुसार, १९ मई २०२३ को २००० रुपए के नोटों की कुल मूल्यवत्ता ३.५६ लाख करोड़ रुपए थी, जो ३० अप्रैल २०२५ तक घटकर ६,२६६ करोड़ रुपए रह गई है। यानी ९८% से अधिक नोट वापस आ चुके हैं। बैंक ने कहा कि ४९२९% की दर से इनकी वापसी हुई, जिससे साफ होता है कि लोगों ने बड़ी संख्या में नोट लौटाए हैं, फिर भी कुछ हज़ार करोड़ अब भी सर्कुलेशन में हैं।

अब क्या कर सकते हैं जिनके पास २००० के नोट हैं?

अगर आपके पास अब भी २००० रुपए के नोट हैं, तो घबराने की ज़रूरत नहीं है। आप इन्हें अभी भी भारतीय रिज़र्व बैंक के १९ क्षेत्रीय कार्यालयों में जमा कर सकते हैं। हालांकि, ७ अक्टूबर २०२३ के बाद बैंकों की शाखाओं में इन्हें जमा करने या बदलने की सुविधा

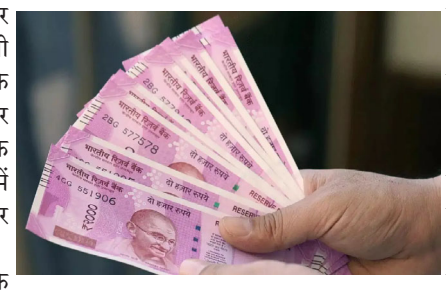

बंद कर दी गई थी।

९ अक्टूबर २०२३ से ठइख के ज़ोनल या जारीकर्ता कार्यालय व्यक्तिगत या संस्थागत खाताधारकों से २००० रुपए के नोट उनके बैंक खाते में जमा करने के लिए स्वीकार कर रहे हैं।

इसके अलावा, लोग भारतीय डाक विभाग के जरिए २००० रुपए के नोट किसी भी आरबीआई कार्यालय को भेज सकते हैं ताकि उन्हें अपने बैंक खातों में जमा कराया जा सके।

यह भी पढ़ें:

आरबीआई ने २००० रुपए के नोटों को लेकर दिया बड़ा अपडेट, अब इनका क्या होगा?

सरकारी कर्मचारियों को मिलेगा फायदेमंद फिटमेंट फैक्टर

८वें वेतन आयोग की संभावनाएं, क्या होगा कर्मचारियों का फायदा?

ऊ- और ग्रेच्युटी में संभावित बढ़ोतरी से लाखों कर्मचारियों को राहत

सीजीआय को रिसीव करने नहीं पहुंचे महाराष्ट्र के चीफ सेक्रेटरी और डीजीपी: जस्टिस बी.आर. गवई ने प्रोटोकॉल उल्लंघन पर जताई नाराजगी

लोकतंत्र के तीनों स्तंभों को एक-दूसरे का सम्मान करना चाहिए

मुंबई, १८ मई:

भारत के ५२वें मुख्य न्यायाधीश (उगख) जस्टिस भूषण रामकृष्ण गवई ने रविवार को मुंबई में एक कार्यक्रम के दौरान महाराष्ट्र के वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा प्रोटोकॉल के पालन न किए जाने पर असंतोष जताया। उन्होंने कहा कि उगख बनने के बाद उनके पहली बार राज्य में आगमन पर महाराष्ट्र के चीफ सेक्रेटरी, डीजीपी और मुंबई के पुलिस कमिश्नर का स्वागत के लिए उपस्थित न होना चिंताजनक है।

जस्टिस गवई ने महाराष्ट्र-गोवा बार काउंसिल द्वारा आयोजित सम्मान समारोह में कहा, मैं ऐसे छोटे-मोटे मुद्दों पर बात नहीं करना चाहता, लेकिन यह खेदजनक है कि महाराष्ट्र के वरिष्ठ अधिकारी संविधानिक पदों के प्रोटोकॉल का पालन नहीं करते। जब देश का मुख्य न्यायाधीश पहली बार राज्य में आ रहा हो, तो यह स्वाभाविक अपेक्षा होती है कि राज्य के मुख्य सचिव, पुलिस महानिदेशक और कमिश्नर उसकी अगवानी करें। ऐसा न करना सोचने पर मजबूर करता है।

उन्होंने कहा कि लोकतंत्र के तीनों स्तंभ - विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका - एक समान हैं और इन सबको एक-दूसरे का सम्मान करना चाहिए। न्यायपालिका, कार्यपालिका या संसद कोई भी सर्वोच्च नहीं है, संविधान ही सर्वोच्च है और सभी को उसके अनुरूप कार्य करना चाहिए, उन्होंने जोर देते हुए कहा। सम्मान समारोह में भावुक हुए उगख

समारोह के दौरान जस्टिस गवई लोगों के प्रेम और सम्मान से भावुक हो गए। उन्होंने कहा, आज का दिन मेरे लिए अविस्मरणीय है। ४० वर्षों से जो स्नेह और प्रेम मुझे मिल रहा है, वह आज फिर झलक रहा है। मैं शब्दों में अपनी भावनाएं व्यक्त नहीं कर पा रहा हूं। उन्होंने मराठी में सभा को संबोधित करते हुए राज्य की जनता के प्रति कृतज्ञता जताई और डॉ. बाबासाहेब अंबेडकर की चैत्यभूमि जाकर श्रद्धांजलि भी अर्पित की। उगख गवई का संदेश - न्यायपालिका को जनता से जुड़ना चाहिए

शनिवार को बार काउंसिल ऑफ इंडिया के एक अन्य कार्यक्रम में बोलते हुए उगख गवई ने कहा कि जजों को जमीन की सच्चाई से कटे हुए नहीं रहना चाहिए। उन्होंने कहा कि आज की न्यायपालिका को मानवीय संवेदनाओं और सामाजिक जटिलताओं को समझते हुए निर्णय लेने की आवश्यकता है।

यह धारणा गलत है कि सुप्रीम कोर्ट के जजों को जनता से दूर रहना चाहिए। न्यायपालिका और आम जनता के बीच दूरी असरदार नहीं होती, उन्होंने कहा।

जस्टिस गवई नवंबर २०२५ तक भारत के मुख्य न्यायाधीश पद पर रहेंगे।

अमेरिका ने भारतीय आमों की १५ खेप लौटाई, ४ करोड़ से ज्यादा का नुकसान

नई दिल्ली, १८ मई:

भारतीय आमों के निर्यात को उस समय बड़ा झटका लगा जब अमेरिका ने भारत से भेजी गई १५ शिपमेंट को रिजेक्ट कर दिया। लॉस एंजेलिस, सैन फ्रांसिस्को और अटलांटा एयरपोर्ट्स पर इन खेपों को रोककर या तो नष्ट करने या भारत लौटाने का आदेश दिया गया है।

अमेरिकी अधिकारियों ने दस्तावेजों में गड़बड़ी और कागजी प्रक्रिया में त्रुटियों का हवाला देकर इन शिपमेंट्स को स्वीकार करने से इनकार कर दिया। इस कार्रवाई से भारतीय एक्सपोर्टर्स को ४ करोड़ रुपये से ज्यादा का नुकसान हुआ है।

निर्यात क्षेत्र से जुड़े विशेषज्ञों का कहना है कि यह मामला केवल आर्थिक नहीं, बल्कि भारत की निर्यात प्रतिष्ठा से भी जुड़ा है। यदि दस्तावेज़ी प्रक्रियाओं में पारदर्शिता और सावधानी नहीं बरती गई, तो इससे अन्य कृषि उत्पादों के निर्यात पर भी असर पड़ सकता है।

सरकार से उम्मीद की जा रही है कि वह इस मामले में आवश्यक हस्तक्षेप करेगी और भविष्य में ऐसी घटनाएं न दोहरें, इसके लिए निर्यात प्रक्रियाओं को और सुदृढ़ बनाया जाएगा।

भाजपा के ८१ जिलाध्यक्षों की फर्जी सूची वायरल, साइबर पुलिस में होगी शिकायत-रविंद्र चव्हाण

- रिपोर्ट: जमीर काज़ी, मुंबई

मुंबई, १८ मई:

भारतीय जनता पार्टी, जिसे भारत ही नहीं बल्कि दुनिया का सबसे बड़ा राजनीतिक दल माना जाता है, उसकी महाराष्ट्र इकाई को उस समय असमंजस में डाल दिया गया जब सोशल मीडिया पर भाजपा जिलाध्यक्ष २०२५ नाम से ८१ जिलाध्यक्षों की एक फर्जी सूची तेजी से वायरल हो गई। इस सूची को लेकर पार्टी कार्यकर्ताओं और पदाधिकारियों के बीच भ्रम की स्थिति बन गई है। भाजपा महाराष्ट्र ने इस मामले में साइबर पुलिस में शिकायत दर्ज कराने का निर्णय लिया है।

भाजपा के महाराष्ट्र प्रदेश कार्याध्यक्ष रविंद्र चव्हाण ने एक अधिकृत प्रेस विज्ञप्ति के माध्यम से स्पष्ट किया कि सोशल मीडिया पर वायरल की गई यह सूची पूरी तरह फर्जी है और पार्टी का इससे कोई संबंध नहीं है। उन्होंने बताया कि अब तक केवल ५८ जिलाध्यक्षों की अधिकृत घोषणा की गई है, जबकि शेष ८१ जिलाध्यक्षों की नियुक्ति प्रक्रिया अभी जारी है।

रविंद्र चव्हाण ने कहा, पार्टी के वरिष्ठ नेताओं की रणनीति के अनुसार कार्यकर्ताओं को अवसर दिए जा रहे हैं। इस संदर्भ में सदस्यता अभियान भी बड़े पैमाने पर चलाया गया है। आगामी स्थानीय स्वराज संस्थाओं के चुनावों को ध्यान में रखते हुए संगठनात्मक तैयारियां जोरों पर हैं। इसी दौरान अज्ञात तत्वों ने शनिवार से एक फर्जी सूची सोशल मीडिया पर वायरल की, जिसमें कई संदिग्ध नाम शामिल हैं।

चव्हाण ने आशंका जताई कि यह सूची जानबूझकर भ्रम फैलाने और पार्टी की छवि खराब करने के मकसद से फैलाई जा रही है। उन्होंने कहा कि कार्यकर्ताओं और मीडिया संस्थानों को केवल अधिकृत माध्यमों से जारी की गई सूचनाओं पर ही भरोसा करना चाहिए।

पार्टी की ओर से कहा गया है कि जो भी व्यक्ति या समूह इस प्रकार की फर्जी जानकारी फैलाने में शामिल होगा, उसके खिलाफ साइबर क्राइम के अंतर्गत कड़ी कानूनी कार्रवाई की जाएगी।

उलेमा बोर्ड अब राजनीति के मैदान में उतरने को तैयार!

नेतृत्व निर्माण के लिए प्रस्ताव पारित, चुनावों के लिए बनेगा राजनीतिक पैनल

रिपोर्ट: जमीर काज़ी, मुंबई

मुंबई, १८ मई:

देश में अल्पसंख्यक मुस्लिम समाज पर धार्मिक प्रभाव रखने वाला अखिल भारतीय उलेमा बोर्ड अब स्वयं राजनीति के मैदान में उतरने जा रहा है। हाल ही में मुंबई में आयोजित एक बैठक में यह निर्णय लिया गया कि मुस्लिम समाज केवल वोट बैंक बनकर न रहे, बल्कि खुद का राजनीतिक नेतृत्व तैयार करे। इस उद्देश्य से स्थानीय स्वराज्य संस्थाओं के आगामी चुनावों में सक्रिय भूमिका निभाने के लिए एक राजनीतिक पैनल के गठन की घोषणा की गई है।

सांताक्रूज़ स्थित आज़ाद स्कूल में 'तलाश-ए-नेतृत्व' विषय पर हुई बैठक

इस बैठक में राजनीति में अब मुस्लिम समाज का केवल उपयोग और शोषण किसी भी कीमत पर बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। अब राष्ट्र का नेतृत्व, राष्ट्र के हाथ में होगा, ऐसा स्पष्ट संदेश सभी राजनीतिक दलों को दिया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य था शिक्षित वर्ग में नेतृत्व की भावना को जागृत करना और स्थानीय स्तर पर आत्मनिर्भर राजनीतिक सोच की नींव रखना।

उलेमा बोर्ड के अध्यक्ष अल्लामा बानी नईम हसनी ने क्या कहा?

अध्यक्ष अल्लामा बानी नईम हसनी ने कहा, अब हमें सिर्फ वोट बैंक बनकर नहीं रहना है। राजनीति को समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुँचाना होगा। आगामी स्थानीय निकाय चुनावों में योग्य, ईमानदार और कर्तव्यनिष्ठ उम्मीदवारों को आगे लाना होगा जो समाज के सभी वर्गों का प्रतिनिधित्व कर सकें।

उन्होंने बताया कि महाराष्ट्र में स्थानीय निकाय चुनावों के लिए बोर्ड ने राजनीतिक पैनल का गठन किया है, जिसकी मुख्य समन्वयक शबाना खान होंगी, जबकि मुंबई प्रभारी की जिम्मेदारी युसुफ जमाल को सौंपी गई है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता मुफ्ती मोहम्मद हशमतुल्लाह कासमी ने की

बैठक की अध्यक्षता कर रहे मुफ्ती मोहम्मद हशमतुल्लाह कासमी ने ज़मीन से जुड़े नेतृत्व की महत्ता पर ज़ोर देते हुए कहा, मुस्लिम समाज का राजनीति में शोषण अब बंद होना चाहिए। इसके लिए हमें स्वयं प्रयास करना होगा। ग्रासरूट लीडरशिप प्रोग्राम के माध्यम से जागरूकता अभियान चलाया जाएगा। अब नेतृत्व राष्ट्र के हाथों में होगा।

यह निर्णय मुस्लिम समाज के बीच एक नए राजनीतिक विमर्श की शुरुआत मानी जा रही है, जो केवल समर्थन नहीं, बल्कि स्वयं नेतृत्व की दिशा में बड़ा कदम है। इस मिटिंग में सलीम अलवारे भी मौजूद थे।

छात्रों के संघर्ष के समय समाज को साथ देना चाहिए: अदीबा अनम आयएएस

पत्रकार जमीर काजी का भी सम्मान।

मुंबई, १८ मई: संवाददाता

जब कोई छात्र प्रतियोगी परीक्षा या किसी भी क्षेत्र में सफलता प्राप्त करता है, तब समाज उसकी प्रशंसा करता है। लेकिन वास्तविक ज़रूरत तब होती है जब वह कठिन परिश्रम और संघर्ष की दौर से गुजर रहा होता है। ऐसे समय समाज को उसके पीछे मजबूती से खड़ा रहना चाहिए। यह विचार यवतमाल की अदीबा अनम ने व्यक्त किए, जिन्होंने लोकसेवा आयोग परीक्षा में उल्लेखनीय स्थान प्राप्त किया है।

यह वक्तव्य उन्होंने महाराष्ट्र राज्य अल्पसंख्यक अधिकारी कर्मचारी असोसिएशन (मराका) द्वारा आयोजित ईद मिलन एवं गुणगौरव समारोह में दिया। अदीबा हसन अशफाक अहमद महाराष्ट्र की मुस्लिम समाज की पहली महिला खड बनी हैं। उनके साथ-साथ णझडउ में ५९४वां स्थान प्राप्त करने वाले सैयद मोहम्मद आरिफ मोमिन तथा चझडउ एवं अन्य क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य करने वाले प्रतिभाओं का भी सम्मान किया गया।

कार्यक्रम के प्रमुख अतिथि जे.जे. अस्पताल के औषध निर्माण विभाग के पूर्व प्रमुख डॉ. सादिक पटेल थे। अध्यक्षता लेखा व कोषागार विभाग के पूर्व संचालक एजाज नक़वी ने की। यह भव्य आयोजन भायखला स्थित खिलाफ़त हाउस सभागार में संपन्न हुआ। कार्यक्रम का संयोजन असोसिएशन के संस्थापक अध्यक्ष एवं ऋढढ विभाग के सहआयुक्त हाजी जतकर और अन्य पदाधिकारियों द्वारा बड़े ही सुव्यवस्थित तरीके से किया गया।

समाज को बिना भेदभाव सहायता करनी चाहिए - अदीबा हसन

अपने अनुभव साझा करते हुए अदीबा हसन ने कहा, प्रतिकूल परिस्थितियों में प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करने वाले छात्रों को समाज के जानकार वर्ग से समर्थन मिलना चाहिए। छात्रों की योग्यता को देखना चाहिए, न कि उनकी जाति या धर्म को। अगर आवश्यक सुविधाएं और सहयोग दिया जाए तो सफलता की दर निश्चित ही बढ़ेगी।

शिक्षा ही विकास का मार्ग - डॉ. सादिक पटेल

अपने संबोधन में डॉ. सादिक पटेल ने कहा, समाज की समग्र प्रगति के लिए शिक्षा ही एकमात्र साधन है। जिस समाज के पास शिक्षित और मेधावी युवक-युवतियां होती हैं, उसका भविष्य उज्जवल होता है।

हाजी जतकर ने संस्थागत कार्यों का प्रस्तुत किया लेखा-जोखा

संस्थापक हाजी जतकर ने असोसिएशन द्वारा किए गए कार्यों की जानकारी दी और बताया कि संस्था अधिकारी, कर्मचारी और विद्यार्थियों के साथ पूरी निष्ठा से खड़ी है। पत्रकार जमीर काज़ी का हुआ सम्मान पिछले ढाई दशकों से मराठी पत्रकारिता में सक्रिय जमीर काज़ी का भी इस अवसर पर सम्मान किया गया। डॉ. सादिक पटेल के हाथों उन्हें मानचिन्ह, शाल और श्रीफल भेंट किया गया। मूल रूप से कोल्हापुर के निवासी जमीर काज़ी पिछले १८ वर्षों से मुंबई में कार्यरत हैं। उनकी उत्कृष्ट पत्रकारिता के लिए महाराष्ट्र सरकार सहित कई सामाजिक संस्थाओं द्वारा उन्हें सम्मानित किया गया है।

उर्दू दैनिक तामीर के २५ वे साल में क़दम रखने पर एक और पेशकश

शिवराज दिवटे पर हमले के विरोध में तीन घंटे तक रास्ता रोको आंदोलन

गांववालों ने की आरोपियों पर मकोका लगाने की मांग

परळी, १८ मई (प्रतिनिधि):

लिंबोटा निवासी युवक शिवराज दिवटे पर हुए अमानवीय हमले के विरोध में ग्रामीणों ने रविवार सुबह छह बजे से परळी-बीड मार्ग पर लिंबोटा (गोपीनाथगड) स्थित संत भगवान बाबा चौक पर तीन घंटे तक रास्ता रोको आंदोलन किया। इस दौरान आरोपियों पर मकोका (महाराष्ट्र संगठित अपराध नियंत्रण अधिनियम) के तहत मामला दर्ज करने और कड़ी कार्रवाई की मांग की गई।

इस आंदोलन में लिंबोटा, पांगरी, देशमुख टाकळी, कौठळी, तांडा, लिंबोटा तांडा, पांगरी तांडा सहित आसपास के गांवों के नागरिकों और महिलाओं ने बड़ी संख्या में भाग लिया। यह शांतिपूर्ण आंदोलन गांव के वरिष्ठ नेता फूलचंद कराड के नेतृत्व में संपन्न हुआ।

प्रदर्शनकारियों ने मांग की कि शिवराज दिवटे पर हमला करने वालों के खिलाफ मकोका के अंतर्गत मामला दर्ज कर उन्हें शीघ्र न्याय दिलाया जाए। ग्रामीणों ने दृढ़ संकल्प व्यक्त किया कि आरोपियों को तुरंत सजा मिलनी चाहिए। यदि प्रशासन ने समय पर कार्रवाई नहीं की तो आंदोलन और तीव्र किया जाएगा, ऐसी चेतावनी भी दी गई।

स्थानीय पुलिस प्रशासन ने मौके पर सुरक्षा बल तैनात कर स्थिति को नियंत्रण में रखा। रास्ता रोको आंदोलन के कारण कुछ समय तक यातायात बाधित रहा।

अजित पवार की सभा में अधिक संख्या में उपस्थित रहें-विधायक विजयसिंह पंडित का आह्वान

गैरकानूनी कब्जाधारकों को पीटीआर वितरण और १८ करोड़ के विकास कार्यों का होगा शुभारंभ

गेवराई, १८ मई (प्रतिनिधि): विधानसभा चुनाव के बाद गेवराई शहर को १८ करोड़ रुपये की निधि मंजूर हुई है। वर्षों से लंबित पीटीआर (मालमत्ता कर पावती) का मामला भी अब स्थायी रूप से सुलझ गया है। उपमुख्यमंत्री अजित पवार के नेतृत्व में यह संभव हुआ है। उनके हाथों विकास कार्यों के शुभारंभ के साथ-साथ अतिक्रमणधारकों को पीटीआर का वितरण सोमवार १९ मई को शाम ५.३० बजे गेवराई शहर में किया जाएगा। इस अवसर पर आयोजित सभा में अधिक से अधिक संख्या में उपस्थित रहने का आह्वान विधायक विजयसिंह पंडित ने किया है। वह गेवराई में आयोजित एक पत्रकार परिषद में बोल रहे थे। इस दौरान उन्होंने पूर्व नगराध्यक्ष महेश दाभाडे और उनके सहयोगियों के राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी में प्रवेश की घोषणा भी की।

सभा और वितरण कार्यक्रम गेवराई के र.भ. अत्तल महाविद्यालय परिसर में आयोजित किया गया है। इस अवसर पर राज्य के उपमुख्यमंत्री तथा बीड़ जिले के संपर्क मंत्री अजित पवार, पर्यावरण मंत्री पंकजा मुंडे, पूर्व मंत्री विधायक धनंजय मुंडे, जय भवानी सहकारी शुगर फैक्ट्री के चेयरमैन अमरसिंह पंडित, विधायक सतीश चव्हाण, विधायक विक्रम काळे, पूर्व विधायक बालासाहेब आजबे, राकांपा ओबीसी सेल के प्रदेशाध्यक्ष कल्याण आखाडे, राकांपा सामाजिक न्याय विभाग के प्रदेशाध्यक्ष प्रो. सुनील मगरे, राकांपा जिला अध्यक्ष राजेश्वर चव्हाण, भाजपा जिला अध्यक्ष शंकर देशमुख, शिवसेना जिला प्रमुख स्वप्निल गलधर समेत कई मान्यवर उपस्थित रहेंगे।

इस पत्रकार परिषद में विधायक पंडित के साथ मंच पर पूर्व नगरसेवक निजाम शेख (बीड), सचिन मोटे, कृष्णा मुले, मंज़ूर बागवान, विलास सुतार, राधेश्याम येवले और किशोर कांडेकर समेत कई गणमान्य लोग उपस्थित थे।

विकास कार्यों की दिशा में गंभीर प्रयास - विजयसिंह पंडित

विधायक विजयसिंह पंडित ने कहा कि विधानसभा चुनाव के प्रचार के दौरान दिए गए वचनों को पूरा करने की दिशा में गंभीरता से कार्य शुरू है। अमरसिंह पंडित के मार्गदर्शन में गेवराई के कई लंबित विकास कार्य पूरे हो रहे हैं। उन्होंने कहा कि शहर के गरीब तबके के लोगों के अतिक्रमण को वैध करने का काम उनके दल ने किया है, जबकि पूर्व सत्ताधारियों ने अपने स्वयं के अतिक्रमण वैध कराने के लिए सत्ता का उपयोग किया। साथ ही उन्होंने यह भी जानकारी दी कि शहर की सीमा विस्तार का वर्षों से लंबित मामला जल्द ही हल होने वाला है।

महेश दाभाडे का बयान:

अच्छे काम करने वालों के साथ रहूंगा - शिवछत्र परिवार के साथ भविष्य में काम करूंगा

इस अवसर पर पूर्व नगराध्यक्ष महेश दाभाडे ने कहा कि शिवछत्र परिवार ने कभी भी बदले की राजनीति नहीं की। जिनके खिलाफ मैं लड़ा, उन्होंने मुझे अपनाया - यह उनके मन की विशालता दर्शाता है। भैय्यासाहेब और विधायक विजयसिंह पंडित जमीनी स्तर पर काम करते हैं और आम जनता की समस्याओं की जानकारी रखते हैं। मेरे साथ के कार्यकर्ताओं को राजनीति में सम्मान मिले, इसके लिए मैं शिवछत्र परिवार के साथ भविष्य में काम करूंगा।

उपमुख्यमंत्री तथा बीड़ जिल्हा संपर्क मंत्री अजित पवार का बीड़ जिले का दौरा कार्यक्रम घोषित

बीड़, १८ मई (जि.मा.का.):

महाराष्ट्र के उपमुख्यमंत्री एवं बीड़ जिले के संपर्क मंत्री श्री अजित पवार सोमवार, १९ मई को एक दिवसीय दौरे पर बीड़ जिले में रहेंगे। इस दौरान वे परळी, अंबाजोगाई, बीड़ और गेवराई में विभिन्न विकास परियोजनाओं का उद्घाटन, समीक्षा बैठकें तथा जनप्रतिनिधियों व अधिकारियों से मुलाकात करेंगे। उनका दिनभर का दौरा कार्यक्रम निम्नानुसार रहेगा:

परळी वैजनाथ:

सुबह ८:०५ बजे - परळी वैजनाथ थर्मल स्थित शक्तीकुंज वसाहत मैदान के हेलीपैड पर आगमन।

सुबह ८:१५ बजे - श्री क्षेत्र परळी वैजनाथ ज्योतिर्लिंग मंदिर में दर्शन।

सुबह ९:०० बजे - शासकीय विश्रामगृह, परळी में आगमन। वहां वरिष्ठ अधिकारियों के साथ तीर्थक्षेत्र विकास आराखड़ा और औद्योगिक औष्णिक केंद्र पर चर्चा।

अंबाजोगाई:

सुबह १०:३० बजे - शासकीय वैद्यकीय महाविद्यालय व रुग्णालय में आगमन।

सादरीकरण, बाह्य विभाग व मुलभूत वसति गृह की नवीन इमारतों का निरीक्षण। बी-बिल्डिंग सर्जिकल वार्ड एवं मॉड्युलर ऑपरेशन थिएटर का लोकार्पण।

सुबह ११:३० से दोपहर १२:३० बजे - श्री राजकिशोर मोदी के निवास (गुरुवार पेठ) पर आरक्षित समय।

बीड़ शहर:

दोपहर १२:४५ बजे - कृषि महाविद्यालय, अंबाजोगाई हेलीपैड से बीड़ के लिए हेलिकॉप्टर द्वारा प्रस्थान।

दोपहर १:१५ बजे - बीड़ पुलिस मुख्यालय हेलीपैड पर आगमन।

दोपहर १:२० बजे - जिलाधिकारी कार्यालय, बीड़ में आगमन। १:३० बजे - जिला नियोजन समिति की बैठक।

३:३० बजे - खरीफ हंगाम पूर्व समीक्षा बैठक (वर्ष २०२५-२६)।

शाम ४:३० बजे - विभिन्न विकास कार्यों की जिलास्तरीय समीक्षा बैठक व उसके बाद प्रेस कॉन्फ्रेंस।

गेवराई:

शाम ७:०० बजे - कृष्णाई निवास (पुराना बस स्टैंड), गेवराई में आगमन।

शाम ७:३० बजे - आर.बी. अट्टल महाविद्यालय में विकास कार्यों के शुभारंभ कार्यक्रम में सहभाग।

रात ९:४५ बजे - गेवराई से छत्रपती संभाजीनगर के लिए प्रस्थान।

उपमुख्यमंत्री पवार के इस व्यापक दौरे से जिले के विकास कार्यों को गति मिलने की उम्मीद है। जिला प्रशासन ने दौरे की तैयारियां पूर्ण कर ली हैं।

शिवराज दिवटे पर हमले के आरोपियों पर लगे मकोका-राजेसाहेब देशमुख की मांग

मुख्यमंत्री, उपमुख्यमंत्री और पुलिस अधिकारियों से करेंगे मुलाकात

अंबाजोगाई, १८ मई (प्रतिनिधि):

शिवराज दिवटे नामक युवक पर हुए भीषण हमले को लेकर राष्ट्रवादी काँग्रेस (शरद पवार गुट) के नेता राजेसाहेब देशमुख ने आरोपियों के खिलाफ मकोका (महाराष्ट्र संगठित अपराध नियंत्रण अधिनियम) लगाने की मांग की है। उन्होंने कहा कि आरोपी कोई भी हो, किसी भी जाति या धर्म से हो, संगठित रूप से हमला करने वाले अपराधियों को सख्त सजा दी जानी चाहिए और ऐसे गुंडों की सार्वजनिक रूप से धिंड निकाली जाए।

शुक्रवार की शाम परळी वैजनाथ के निवासी शिवराज दिवटे का अपहरण कर रत्नेश्वर डोंगर इलाके में ले जाकर लोहे की रॉड, लकड़ी और धारदार हथियारों से बुरी तरह पीटा गया। उसके सिर पर कांच की बोतल भी फोड़ी गई। पुलिस ने इस मामले में एफआईआर दर्ज कर कुछ लोगों को गिरफ्तार भी किया है। राजेसाहेब देशमुख ने इस कायरतापूर्ण हमले की कड़ी निंदा करते हुए बताया कि वे जल्द ही मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस, उपमुख्यमंत्री अजित पवार, पुलिस आयुक्त और बीड़ जिला पुलिस अधीक्षक नवनीत कॉवत से इस संबंध में मुलाकात करेंगे।

देशमुख ने बताया कि घटना के समय शिवराज जलालपुर में सप्ताह आयोजन के भोजन में गया हुआ था। वहां कुछ असामाजिक तत्वों द्वारा लड़कियों से छेड़छाड़ की कोशिश को स्थानीय लोगों ने रोका, उस समय शिवराज केवल मौजूद था। इस बात को लेकर हमलावरों ने शिवराज से रंजिश पाल रखी और रिलायंस पेट्रोल पंप के पास उसका अपहरण कर पांच गाड़ियों में जबरन रत्नेश्वर डोंगर ले जाकर मारपीट की। हमलावर इसका संतोष देशमुख पार्ट-२ करना है जैसे जुमले बोलते हुए नजर आए।

राजेसाहेब देशमुख ने कहा कि यह हमला सिर्फ एक आपराधिक घटना नहीं बल्कि समाज में पनप रही असुरक्षा का प्रतीक है। जैसे स्व. संतोष देशमुख की हत्या हुई थी, उसी पैटर्न पर अब शिवराज दिवटे को निशाना बनाया गया। यह संगठित अपराध का हिस्सा है जिसमें सत्ता, वर्चस्व और कानून का डर नहीं दिखता। बीड़ जिले में गुंडागर्दी बढ़ती जा रही है और सोशल मीडिया पर हिंसा के वीडियो वायरल कर समाज में डर पैदा किया जा रहा है।

उन्होंने कहा कि पुलिस को ऐसे गिरोहों के खिलाफ विशेष अभियान चलाना चाहिए। स्थानीय स्तर पर खुफिया तंत्र को मजबूत करें और अपराधियों की आर्थिक कमर तोड़ी जाए। सरकार को चाहिए कि ऐसे खलप्रवृत्ति के लोगों पर कोई रहम न करते हुए सख्त कार्रवाई करे और पीछे का राजनैतिक समर्थन.

तालिबान भारत के साथ संबंधों को फिर से सामान्य करना चाहता है-सुहैल शाहीन

नई दिल्ली, १८ मई ।

नई दिल्ली:

तालिबान के प्रवक्ता सुहैल शाहीन ने शुक्रवार को कहा कि अफगानिस्तान भारत के साथ अपने ऐतिहासिक संबंधों की पुनः स्थापना और सामान्यीकरण का इच्छुक है। उनका यह बयान विदेश मंत्री एस. जयशंकर और तालिबान के कार्यवाहक विदेश मंत्री अमीर खान मुत्ताकी के बीच फोन पर हुई पहली बातचीत के बाद सामने आया है।

अगस्त २०२१ में तालिबान द्वारा अफगानिस्तान पर नियंत्रण करने के बाद यह भारत और तालिबान के बीच उच्चतम स्तर की पहली सीधी बातचीत मानी जा रही है, जिसने अंतरराष्ट्रीय कूटनीतिक हलकों का ध्यान खींचा है। यह बातचीत ऐसे समय में हुई है जब भारत और पाकिस्तान के बीच तनाव की स्थिति बनी हुई है।

इस मामले से अवगत सूत्रों के अनुसार, मुत्ताकी द्वारा विदेश मंत्री जयशंकर को फोन करना इस सप्ताह उनके ईरान और चीन दौरे से पहले एक अहम कूटनीतिक कदम है। यह कॉल उस श्रृंखला की अगली कड़ी है, जिसमें इस साल जनवरी में दुबई में मुत्ताकी और भारत के विदेश सचिव विक्रम मिस्री की मुलाकात हुई थी, और साथ ही हाल ही में पहलगाम आतंकी हमले के कुछ दिनों बाद एक भारतीय राजनयिक ने काबुल का दौरा किया था।

कतर में तालिबान के विशेष दूत सुहैल शाहीन से जब इस कॉल की अहमियत के बारे में पूछा गया, तो उन्होंने हिंदुस्तान टाइम्स को बताया:

अफगानिस्तान और भारत के बीच ऐतिहासिक संबंध रहे हैं। इन संबंधों को फिर से जीवित करने और सामान्य बनाने की आवश्यकता है। हमारी नीति संतुलित है और हमारे दरवाज़े सभी देशों के लिए खुले हैं, जो अफगानिस्तान में निवेश और विभिन्न क्षेत्रों में सहयोग करना चाहते हैं।

शाहीन ने आगे कहा, हम एक नई शुरुआत कर रहे हैं और हमें ऐसे ही सहयोगात्मक संबंधों की ज़रूरत है।

विशेषज्ञों के अनुसार, तालिबान की ओर से यह निवेश और व्यापार सहयोग की पेशकश इसलिए भी अहम मानी जा रही है क्योंकि भारत और अफगानिस्तान के बीच द्विपक्षीय व्यापार फिलहाल लगभग १ बिलियन डॉलर के स्तर पर है, जिसे दोनों देश आगे बढ़ाने के रास्ते तलाश रहे हैं।

हैदराबाद अग्निकांड: मृतकों के परिजनों को ५ लाख रुपये मुआवज़ा देगी तेलंगाना सरकार

हैदराबाद, १८ मई । रिपोर्ट - हैदराबाद:

तेलंगाना सरकार ने हैदराबाद के चारमीनार के पास गुलजार हौज़ इलाके में हुए भयावह अग्निकांड में मारे गए १७ लोगों के परिजनों को प्रत्येक को ५ लाख रुपये का मुआवज़ा देने की घोषणा की है। मुख्यमंत्री रेवंत रेड्डी ने इस हादसे की जांच करवाने का भी ऐलान किया है।

उपमुख्यमंत्री भट्टी विक्रमार्क ने उस्मानिया अस्पताल में मृतकों के परिजनों से मुलाकात कर उन्हें सांत्वना दी और घायलों का हालचाल भी जाना। मुख्यमंत्री की हिदायत पर उपमुख्यमंत्री ने अपना निर्धारित मधीरा दौरा रद्द कर तुरंत उस्मानिया अस्पताल पहुंचकर हालात का जायजा लिया।

इस अवसर पर उपमुख्यमंत्री के साथ राज्य के मंत्री दामोदर राज नरसिंह, पोनम प्रभाकर और अन्य वरिष्ठ अधिकारी भी मौजूद रहे।

भट्टी विक्रमार्क ने कहा कि इस दुखद घटना में जान गंवाने वाले प्रत्येक व्यक्ति के परिवार को ५ लाख रुपये का मुआवज़ा प्रदान किया जाएगा। उन्होंने घायलों के बेहतर इलाज का आश्वासन भी दिया और प्रशासन को हर संभव सहायता देने के निर्देश दिए। घटना ने पूरे हैदराबाद में शोक की लहर दौड़ा दी है। सरकार ने पीड़ित परिवारों के पुनर्वास और राहत कार्यों को प्राथमिकता देने का वादा किया है।

दैनिक भारत की तामीर अखबार के मालिक, मुद्रक, प्रकाशक, संपादक काजी मखदूम शफीउद्दीन ने आरएम प्रिंटरर्स, बार्शी रोड, बीड 431122 महाराष्ट्र में मुद्रित कर के दैनिक तामीर, नगर परिषद परिसर, बशीर गंज, बीड, महाराष्ट्र कार्यालय से प्रकाशित किया है। मोबाइल : 9270574444 ईमेल : hinditameer@gmail.com वेबसाइट : www.dailytameer.com

daily Bharat ki tameer newspaper owner printer publisher editor Quazi makhdoom shafiuddin has printed at RM printers barshi road beed 431122 Maharashtra at published at office daily tameer nagar parishad complex Bashir gunj beed Maharashtra. Mobile : 9270574444 Email : hinditameer@gmail.com Website : www.dailytameer.com